कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



पढ़ने का जुनून

- पूरे 17वीं और 18वीं सदी के दौरान यूरोप के ज्यादातर हिस्सों में साक्षरता बढ़ती रही।
- अलग-अलग संप्रदाय के चर्चों ने गाँवों में स्कूल स्थापित किये और किसानों-कारीगरों को शिक्षित करने लगे।

संप्रदाय :- किसी धर्म का एक उप-समूह।

- 18वीं सदी के अंत तक यूरोप के कुछ हिस्सों में तो साक्षरता दर 60 से 80 प्रतिशत तक हो गई थी।
- यूरोपीय देशों में साक्षरता और स्कूलों के प्रसार के साथ लोगों में पढ़ने का जैसे जुनू पैदा हो गया।
- लोगों को किताबें चाहिए थीं इसलिए मुद्रक ज्यादा से ज्यादा किताबें छापने लगे।

किताबों के प्रकार :-

LET'S LEARN TOGETHER

- नये पाठकों का ध्यान रखते हुए किस्म-किस्म का साहित्य छपने लगा।
- पुस्तक-विक्रेताओं ने गाँव-गाँव जाकर छोटी-छोटी किताबें बेचने वाले फेरीवालों को काम पर लगाया।
- ये कितबों मुख्यत: पंचांग के अलावा लोक कथाओं और लोक गीतों की हुआ करती थीं।
- लेकिन जल्दी ही मनोरंजन प्रधान सामग्री भी आम पाठकों तक पहुँचने लगी।
- इंग्लैंड में चैपबुक्स या एक पैसिया किताबें बेचने वालों को चैपमेन कहा जाता था।
- इन किताबों को गरीब तबके के लोग भी खरीद कर पढ़ सकते थे।

चैपबुक (गुटका) :- ये पॉकेट बुक के आकार की किताबों को कहा जाता था।
इन्हें आमतौर पर फेरीवाले बेचते थे।
ये 16वीं सदी की मुद्रण क्रांति के समय से लोकप्रिय हुए।

- फ्रांस में बिब्लियोथीक - ब्ल्यू का चलन था जो सस्ते कागज पर नीली जिल्द में छोटी किताब होती थी।
- इसके अलावा 4-5 पन्ने के प्रेम कहानियां थीं।
- अतीत की थोड़ी गाथाऐं थीं, जिन्हें 'इतिहास' कहते थे।
- अलग-अलग उद्देश्य ओर दिलचस्पी के हिसाब से किताबों के कई आकार प्रकार थे।

पत्रिकाऐं :-

- 18वीं सदी के आरंभ से पत्रिकाओं का प्रकाश शुरू हुआ।

Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इन पत्रिकाओं में सम-सामयिक घटनाओं की खबर के साथ मनोरंजन भी परोसा जाने लगा।
- अखबार और पत्रों में युद्ध और व्यापार से जुड़ी जानकारी के अलावा दूर देशों की खबरें होती थीं।

वैज्ञानिक एवं दार्शनिक पुस्तकें :-

- वैज्ञानिक और दार्शनिक भी आम जनता की पहुँच के बाहर नहीं रहे।
- प्राचीन और मध्य कालीन ग्रंथ संकलित किये गये।
- नक्शों के साथ-साथ वैज्ञानिक खाके भी बड़ी मात्रा में छापे गये।
- जब आइजैक-न्यूटन जैसे वैज्ञानिक ने अपने अविष्कार प्रकाशित करने शुरू किये तो उनके लिए विज्ञान-बोध वाला एक बड़ा पाठक वर्ग तैयार हो चुका था।
- टॉमस - पेन, वॉल्वेयर ओर ज्याँ जाक रूसों जैसे दार्शनिकों की किताबें भी भारी मात्रा में छपने ओर पढ़ी जाने लगीं।
- विज्ञान, तर्क और विवेकवाद के विचार लोकप्रिय साहित्य में भी जगह पाने लगे।

1791 में लंदन के एक प्रकाशक जेंम्स - लॉकिंग्टन ने अपनी डायरी में पत्र लिखा -
पिछले 20 सालों में किताबों की बिक्री में आमतौर पर बेतहाशा वृद्धि हुई है।
गरीब किस्म के किसान या गाँ के लोग जो पहले अपनी शामें डायन-जोगिन और भूत-प्रोत कहानियाँ सुनते हुए बिताते थे..... वे अब अपने संतानों द्वारा पढ़े गये रूमानी या अन्य किस्सों को सुनने का आनंद लेते हुए जाड़े की रातों को छोटी करने लगे हैं।
अगर जॉन शहर जा रहा है तो उसे सख्त हिदायत दी जायेगी कि वह पेरेग्रिन पिकल्स ऐडवेंचर लेकर आये।
अगर डॉली अंडे बेचने जा रही है तो उसे कहा जाता है कि वह द हिस्ट्री ऑफ जोजेफ ऐण्ड्रूज लेकर ही वापस लौटे।

- मर्सिए के उपन्यासों में नायक अकसर किताबें पढ़ने में बदल जाते थे। वे किताब बांटते हैं, किताबों की दुनिया में जीते है और इसी क्रम में ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।
- ज्ञानोदय को लाने में निरंकुशवाद के आधार को नष्ट करने में छापेखाने की भूमिका के बारे में आश्वस्त मर्सिए ने कहा,

''हे निरंकुशवादी शासकों.....
अब तुम्हारे काँपने का वक्त आ गया है।
आभासी लेखक की कलम के जोर के आगे तुम हिल जाओगे।''

दुनिया के जालिमों अब हिलोगे तुम :-

- 18वीं सदी के मध्य तक यह आम विश्वास बन चुका था कि किताबों के जरिये प्रगति ओर ज्ञानोदय होता है।
- कई सारे लोगों का मानना था कि किताबें दुनिया बदल सकती है।
- किताबें निरंकुशवाद और आतंकी राजसत्ता से समाज को मुक्ति दिलाकर ऐसा दौर लायेंगे जब विवेक और बुद्धि का राज होगा।
- 18वीं सदी में फ्रांस के एक उपन्यासकार लुई सेबेस्तिऐं मर्सिए ने घोषणा की,

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

''छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवर औजार है, इससे बन रही जनमत की आँधी में निरंकुशवाद उड़ जायेगा।''

मर्सिए ने अपनी एक किताब में छपे शब्द की ताकत को यूं बयान किया :-

''अगर किसी ने मुझे पढ़ते देखा होगा तो उसने मुझे उस प्यासे की तरह पाया होगा जो शुद्ध ताजा पानी मिलने पर गटगट पीने लगता है.....

बड़े एहतियात से लालटेन जलने के बाद मैं खुद को किताबों में डुबा देता था।

और वाक और अर्थ के प्रवाह में मैं पन्ना-दर-पन्ना बहता चला जाता था अनायास और अनजान।

खामोशी के साये में घड़ियाल हर घंटे बनजा चला जाता था, पर मुझे सुनाई नहीं पड़ता था।

तेल खत्म होने से मेरी लालटेन की लौ पीली पड़ने लगती थी, पर मैं था कि पढ़ता जाता।

मैं बत्ती उठाने की जहमत भी नहीं लेता था कि मेरे आनंद में व्यवधान न पड़े। और ये नये विचार किस वेग से मेरे सिर में घुसते थे। मेरी वृद्धि कैसे उन्हें आत्मसात् करती थी।''

राबर्ट डार्नटन की किताब :- द फौरबिडेन बेस्ट - सेलर्स ऑफ प्री-रेवॉलुशनरी फ्रांस - 1995 से उद्धत

मुद्रण संस्कृति ओर फ्रांसीसी क्रांति :-

- कई इतिहासकारों का मानना है कि मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियां रचीं।
- इसके लिए हम 3 तरह के तर्क देखते हैं :-

पहला :-

- छपाई के चलते चिंतकों के विचारों का प्रसार हुआ।
- उनके लेखन ने अंधविश्वास और निरंकुशवाद की आलोचना पेश की।
- उन्होंने रीति-रिवाजों की जगह विवेक के शासन पर बल दिया।
- उनकी माँग थी कि हर चीज को तर्क और विवेक की कसौटी पर ही कसा जाये।
- उन्होंने चर्च की धार्मिक तथा राज्य की निरंकुश सत्ता पर प्रहार करके, परंपरागत रूप से चल रही सामाजिक व्यवस्था को दुर्बल कर दिया।
- वॉल्तेयर और रूसो के लेखन का व्यापक पाठक वर्ग था।
- इनके पाठक दुनिया को एक नये आलोचनात्मक सवालिया और तार्किक नजरिये से देखने लगे थे।

दूसरा :-

- छपाई ने वाद विवाद और संवाद की नयी संस्कृति को जन्म दिया।
- सारे पुराने मूल्य, संस्थाओं और कायदों पर आम जनता के बीच बहस होने लगीं और पुनर्मूल्यांकन का सिलसिला शुरू हुआ।
- तर्क की ताकत से परिचित यह नयी 'पब्लिक' धार्म और आस्था को प्रश्नांकित करने लगी थी।
- इस प्रकार से बनी दुनिया से ही सामाजिक क्रांति के नये विचारों का सूत्रपात हुआ।

तीसरा :-

- 1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाले साहित्य का ढेर लग चुका

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

था।

- अब सामाजिक व्यवस्था को लेकर तमाम सवाल खड़े किये गये।
- कार्टूनों और व्यंग्य चित्रों में यह भाव उभरता था कि जनता तो मुश्किलों में फंसी है जबकि राजशाही भोग विलास में डूबी हुई है।
- भूमिगत घूमने वाले इस साहित्य ने लोगों को राजतंत्र के खिलाफ भड़काया।

फ्रांसीसी क्रांति के पहले कुलीनवर्ग और आमजन, 18वीं सदी के अंत का एक कार्टून



- इस व्यंग्य चित्र में दिखाया गया है कि जनसाधारण किसान, कारीगर और मजदूर – किस तरह मुश्किल हालात में थे, जबकि जिंदगी के मजे लेने वाला कुलीन वर्ग उनका दोहन करता है।
- इस तरह के कार्टूनों के चलन से क्रांति के पहले लोगों के दिल दिमाग पर खासा असर हुआ।
- इसमें कोई शक नहीं कि छपाई ने विचारों को फैलाने में मदद की।
- लेकिन लोग हर तरह की सामग्री पढ़ते थे। एक तरफ वे रूसों और वॉल्तेयर पढ़ रहे थे तो दूसरी तरफ चर्च और राज्य का प्रोपगैंडा भी।
- वे कुछ विचारों को स्वीकारते थे तो कुछ को नकारते भी थे।
- फिर चीजों को अपने ढंग से व्याख्या भी करते थे।
- इस तरह से चाहे मुद्रण ने उनके मानस को सीधे तौर पर भले ही नहीं रचा हो, पर इसने अलग एंग से सोचने की संभावनाऐं जरूर खोलीं।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here